१५-३-१० की अव्यक्त वाणीमें बापदादाने संपन्न स्टेज- संपूर्ण पवित्रता की स्टेज के लिये बताया है ''अभी वर्सा लेनेवाली आत्माओ की क्यूं लगनी चाहिये । और क्यूं स्क्की हुई क्युं है ? क्योंकि कोई कोई बच्चे अभी व्यर्थ संकल्पो की क्यु में लगे हुये है । क्यों, क्यां, कैसे अभी इस समाप्ति में समय देते है लेकिन व्यर्थ समाप्त नहीं हुआ है, व्यर्थ समर्थ बनने में स्क्कावट डालता है । तो आज बापदादा व्यर्थ संकल्पो की समाप्ति करने के लिये सभी चारो ओर के बच्चो को हिम्मत दे रहे है कि अभी से व्यर्थ को समाप्त कर सदा समर्थ बन समर्थ बनाओ । ''

व्यर्थ संकल्पो की समाप्ति के लिये बापदादाने अपनी अव्यक्त वाणीयों में समय समय पर जो युक्तियां बताई है इनका संग्रह भेज रहे है जिसे बार-बार पढने से आत्मा व्यर्थ से मुक्त बन सदा कर्म करते भी खुशनुमा जीवन का अनुभव करेंगी ।

व्यर्थ से मुक्त होने के लिये बापदादा के अनमोल महावाक्य

- कभी-कभी ड्रामा की सीन देखकर कुछ मंथन चलता है? ज्ञान का मंथन दूसरी बात है। लेकिन ड्रामा की सीन पर मंथन करना - क्यों, क्या, कैसे - यह किस चीज का मंथन है? दहीं को जब मंथन किया जाता है तब मक्खन निकलता है। अगर पानी को मंथन करेंगे तो क्या निकलेगा? कुछ भी नहीं। रिजल्ट में यही होगा - एक तो थकावट, दूसरा -टाइम वेस्ट। इसलिए वह हुआ पानी का मंथन। ऐसा मंथन करने के बजाये ज्ञान का मंथन करना है।
- यह क्यों, कैसे हुआ, अब कैसे होगा, जम्प दे सकूंगा या नहीं। क्वेश्चन नहीं करो। क्वेश्चन-मार्क के बदली फुलस्टॉप, बिन्दी लगाओ।
- बिन्दी लगाते जाओ तो बिन्दी-रूप में स्थित हो सकेंगे।
- जो भी भिन्न-भिन्न वेरायटी संस्कारो का पार्ट देखते हो, उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात खेल नूंधा हुआ है। यह स्मृति में आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी। सदैव एक-रस अवस्था रहेगी। जब स्मृति में रहेगा कि यह वेरायटी पार्ट ड्रामा अर्थात खेल है तो वेरायटी खेल में वेरायटी पार्ट न हो, कभी यह हो सकता है क्या? जब नाम ही है वेरायटी ड्रामा।
- ऐसे ही इस बेहद के खेल का नाम ही है वेरायटी ड्रामा अर्थात खेल तो उसमें वेरायटी संस्कार व वेरायटी स्वभाव व वेरायटी परिस्थितियां देखकर कभी विचलित होंगे क्या?
- तो सीट पर सेट होकर वेरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे। मुख से वाह-वाह निकलेगी। वाह मीठा ड्रामा। यह 'क्या हुआ', 'क्यों हुआ' यह नहीं निकलेगा बल्कि 'वाह-वाह' शब्द मुख से निकलेंगे अर्थात सदा खुशी में झूमते रहेंगे। सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिमान अनुभव करेंगे।
- फाईनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें कवेश्चन के रूपमें आयेगी तब तो पास और फेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी बुद्धिमें कवेश्चन उत्पन्न न हों, यही पेपर है। और है भी एक सेकेन्ड का ही पेपर। 'क्यों' का संकल्प चंद्रवंशी की क्यू में लगा देगा। पहले तो सूर्यवंशी का राज्य होगा ना?
- हर कदम में कल्याण है, जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता उसमें भी कल्याण समाया हुआ है। सिर्फ अन्तरमुख होकर देखो। ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकडा है ना !
- ड्रामा याद रहे तो सदा एकरस रहेंगे। ड्रामा को भूले तो डगमग रहेंगे।
- जब किसी भी प्रकार का पेपर आता है तो गभराओ नहीं। क्वेश्चन मार्क में नहीं आओ कि यह क्युं आया? इस सोचने में टाइम वेस्ट मत करो। क्वेश्चन मार्क खतम और फुल स्टोप लगे तब क्लास चेइन्ज होगा, अर्थात पेपर में पास हो जायेंगे। फुलस्टोप देनेवाला फुल पास होगा क्युंकि फुल स्टोप है बिंदी की स्टेज।

- जो भी दृश्य सामने आता है उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। ''वाह ड्रामा वाह'' याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरुषार्थ में कभी उदासी नहीं आयेगी। स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी।
- जो कुछ भी ड्रामा में होता हैं उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। क्यों? क्या? का कवेश्चन समझदार के अंदर उठ नहीं सकता। अगर स्मृति में रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी। चाहे बाहर की रीति से नुकशान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकशान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो।
- ये क्युं हुआ? ये होना नहीं चाहिये, आखिर ये कहाँ तक होगा? ये तो बडा मुश्किल है, ऐसा क्युं? - ऐसे व्यर्थ संकल्प करना ही पत्थर तोडना है, लेकिन एक शब्द 'ड्रामा' याद आ जाता तो इस शब्द के आधार से हाइ जंप दे देते है।
- यह भी होता है क्या? यह कवेश्चन नहीं। यह क्या हुआ? ऐसे भी होता है? इसके बजाए जो होता है कल्याणकारी है। कवेश्चन खत्म होने चाहिए।
- जो ज्यादा मूंझते हैं - क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ वह मौज में नहीं रह सकते। आप त्रिकालदर्शी बन गये तो फिर 'क्या, क्यों, कैसे' यह संकल्प उठ ही नहीं सकते। क्योंकि तीनों कालों को जानते हो। (१) क्यों हुआ? (કેમ થયું ?) जानते हैं, पेपर है आगे बढने के लिए। (२) क्या हुआ? (શુ થયું ?) नथिंगन्यु। तो क्या हुआ का कवेश्चन ही नहीं। (३) कैसे हुआ? (કઈ રીતે થયું ?)माया और मजबूत बनाने के लिए आई और चली गई।
- क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहीये, मेरे से ही क्युं होता है, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है.... ये रस्सीयां बांधते जाते हो। ऐसे व्यर्थ संकल्प ही कर्मबंधन की सुक्ष्म रस्सीयां है। कर्मातीत आत्मा तो सोचेगी कि जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा - ये बंधन को काटने की केंची का काम करती है। बंधन कट गये तो कर्मातीत हो गये न !
- जन के भाग्यवान आत्मायें, जन के संपर्क संबंध में आते सदा प्रसन्न रहेगी, प्रश्नचित नहीं लेकिन प्रसन्नचित -यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित के अंदर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को प्रश्नचित कहा जाता है और प्रश्नचित कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता।
- ★ हर एक के पार्ट की अपनी-अपनी विशेषता है। ★ हर एक की विशेषता अलग और महान है। ★ एक-दो के पार्ट को देखकर खुश रहो। ★ अपने पार्ट को कम नहीं समझो। ★ सबका पार्ट अच्छे-ते-अच्छा है।
- सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, अपने आप में भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह ! दिखाई ऐसे देगा कि अकल्याण की बात है लेकिन उसमें भी कल्याण छिपा हुआ होगा।
- 'व्हाय' आये तो भी एक शब्द बोलो - वाह, 'वॉट' शब्द आये तो भी बोलो वाह। 'वाह'

शब्द तो आता है ना। वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा। सिर्फ 'वाह' बोलो तो यह तीन शब्द खत्म हो जायेगें।

- हाय-हाय करने वाले तो बहुत मैजारिटी हैं और वाह वाह करने वाले बहुत थोडे हो। तो नये वर्ष में क्या याद रखेंगे? वाह-वाह। जो सामने देखा, जो सुना, जो बोला-सब वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। हाय ये क्या हो गया ! नहीं, वाह, ये बहुत अच्छा हुआ।
- सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे। प्रसन्नचित्त स्थिति में प्रश्न चित्त नहीं होता। एक होता है प्रसन्नचित्त, दूसरा है प्रश्नचित्त। प्रश्न अर्थात् क्वेश्चन। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नोलेजफुल होने के कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता।
- जिस समय जो पार्ट मिलता है, उसमें राजी रह करके पार्ट बजाओ।
- विघ्ना का आना यह भी ड्रामा में आदिसे अंत तक नूंध है। यह विघ्न भी असंभव से संभव की अनुभूति कराते हैं।
- क्या करें, कैसे करें, ये कवेश्चन आना माना उदास होना। जब भी क्यों का कवेश्चन आता है- क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज को जान जाये तो क्यों, क्या का कवेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी है तो यह क्या का कवेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का कवेश्चन उठता है।
- जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी-यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा - यह कवेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के संबंध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता।
- हर बात में अच्छा अच्छा कहते अच्छा बनते जाते क्युंकि हर बात में अच्छाई समाई हुई जरुर होती है। चाहे सारी बात बुरी हो लेकिन एक दो अच्छाई भी जरुर होती है। वह अच्छा ही पाठ पढाती है। पाठ पढाने की अच्छाई हर बात में समाई हुई है। धीरज का भी पाठ पढाती है। अगर दुसरा आवेश कर रहा हो तो आप क्या पाठ पढ रही हो? जितना आवेश उतना ही वह बात आपको धीरज और सहनशीलता सिखाती है। इसलिये कहते है जो हुआ वह अच्छा और जो होना है वो और अच्छा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिये। ऐसे अच्छाई उठाने से ही नंबर मिलते हैं।
- अच्छा ड्रामा में जो भी होता है उसमें भी पक्का निश्चय है? जो ड्रामा में होता है वह कल्याणकारी युग के कारण सब कल्याणकारी है या कुछ अकल्याणकारी हो जाता है? कोई मरता है तो उसमें कल्याण है? वो मर रहा है और आप कल्याण कहेंगे? कल्याण है? बीजनेस में नुकशान हो गया यह कल्याण हुआ? तो नुकशान भी कल्याणकारी है। ज्ञान के पहले जो बातें कभी आपके पास नहीं आई, ज्ञान के बाद आई तो उसमें कल्याण है? माया उपर नीचे कर रही है -

कल्याण है? इस में क्या कल्याण है? माया आपको अनुभवी बनाती है। अच्छा तो ड्रामा में भी इतना ही अटल निश्चय हो, चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है वो परखना चाहिये। तो ड्रामा की बात को परखने की बुद्धि चाहिये। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर होती है। परिस्थिति सामने आवे और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति हो, तब कहेंगे निश्चय बुद्धि विजयी। तो तीनो में पक्का निश्चय चाहिये - बाप में, अपने में और ड्रामा में।

- बेफिक्र बादशाह की विशेषता - वह सदा प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त रहते हैं।
- प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। प्रश्नचित्त आत्मा 'क्या', 'क्यों', 'ऐसा', 'वैसा' - इस उलझन में स्वयं को बेफिक्र से फिक्र में ले आती है।
- फुलस्टोप लगाने का सहज स्लोगन याद रखो-जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा ! क्योंकि क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकण्ड अच्छे ते अच्छा। इससे सदा सहज योगी जीवन का अनुभव करेंगे। '
- जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय।
- क्या, क्यों, कैसे-ये चिन्ता की लहर है। अभी बडी चिंता नहीं होगी, इस स्प में होगी, होना नहीं चाहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं।
- निश्चिंत आत्मा का सदा स्लोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे।
- बाप को फिक्र हैं क्या? इतना बडा परिवार होते भी फिक्र है क्या? सबकुछ जानते हुए, देखते हुए बेफिक्र।
- जब ड्रामा का ज्ञान है तो अचल-अडोल हैं। ड्रामा का ज्ञान नही तो हलचल है।
- छोटी-छोटी बातों में गभराओ नहीं। मूर्ति बन रहे हो तो कुछ तो हेमर लगेंगे ना, नहीं तो ऐसे कैसे मूर्ति बनेंगे !
- वेलकम करो-आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा में ज्यादा गिफ्ट मिलती है, इसमें क्या? ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं।
- ब्राह्मणों की जन्म पत्री में तीनों ही काल अच्छे से अच्छा है। जो हुआ वह भी अच्छा और जो हो रहा है वो और अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत अच्छा। सिर्फ कहने मात्र नहीं लेकिन ब्राह्मण जीवन की जन्म पत्री सदा ही अच्छे से अच्छी है। सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींची हुई है।
- आपकी कमाई का जमा खाता बढाने का सबसे सहज साधन है-बिन्दी लगाते जाओ और बढाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना। और कोई मात्रा है ही नहीं। क्या, क्यों, कैसे-ये कवेश्चन मार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा, किसी की आवश्यकता नहीं है।

- संगम पर सारा खेल ही तीन बिन्दियों का है।
- बिन्दी लगाने से एक सेकण्ड में आपके कितने खजाने बच जाते हैं। खजानों की लिस्ट तो जानते हो ना? अगर बिन्दी के बजाय और कोई मात्रा लगाते हो, वा लग जाती हैं, तो सोचो (१) ज्ञान का खजाना गया, (२) शक्तियों का खजाना गया, (३) गुणों का खजाना गया, (४) संकल्प का खजाना गया, (५) इनर्जी गई, (६) श्वास सफल के बजाए असफल में गया, (७) समय गया।
- तो उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होना चाहिये। उमंग-उत्साह कम क्यों होता है? बापदादा कहते हैं सदा वाह-वाह कहो और कहते हैं व्हाई-व्हाई (Why-Why)। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है।
- इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रूप से बच्चों के समान बनने की विधि सुनाते रहते है। <u>विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है -बिन्दी बनना। अशरिरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है - अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, स्हरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दीयों का तिलक मस्तक पर लगाओ,</u>
- तो जमा का खाता बढाने की विधि है 'बिन्दी' और गंवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, कवेश्चन मार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना।
- अब ऐसे एवररेडी बनो जो हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर श्वास जो बीते वह वाह, वाह हो। व्हाई नहीं हो, वाह, वाह हो। अभी कोई समय वाह-वाह होता हैं, कोई समय वाह के बजाए 'व्हाई' हो जाता है। कोई समय बिंदी लगाते हैं, कोई समय क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की मात्रा लग जाती है।